माध्यमिक स्तर के सरकारी व निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की सांस्कृतिक संचेतना एवं व्यक्तित्व के संदर्भ में उनकी समायोजन क्षमता तथा उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन

आई.आई.एम.टी. विश्वविद्यालय मेरठ की
पीएच.डी. (शिक्षाशास्त्र) उपाधि
हेतु
शोध रूपरेखा

शोध निर्देशिका	शोधकर्त्री
डॉ. सुधा शर्मा	**नीमा देवी**
सहायक प्राध्यपिका	पीएच.डी. (छात्रा)
	एडमीशन आई.डी. 21211122

शोध केन्द्र
शिक्षा विभाग
आई.आई.एम.टी. विश्वविद्यालय
मेरठ

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ संख्या
01.	प्रस्तावना	03—04
02.	प्रस्तुत शोध का उद्भव एवं औचित्य	05—07
03.	सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण	8
04.	समस्या कथन	8
05.	प्रयुक्त चरों की व्याख्या	8
06.	शोध उद्देश्य	9
07.	शोध परिकल्पना	10
08.	शोध परिसीमाएँ	10
09.	शोध विधि	10
10.	जनसंख्या एवं न्यादर्श	11
11.	शोध उपकरण	11
12.	शोध चर	11
13.	प्रयुक्त सांख्यिकी विधि	11
14.	संदर्भ ग्रन्थ सूची	12

प्रस्तावना

शिक्षा एक सापेक्ष, चेतन अथवा अचेतन, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, वैज्ञानिक एवं दार्शनिक वातावरण सम्बन्धी प्रक्रिया है, जिसके द्वारा व्यक्ति के व्यक्तित्व सम्बन्धी सभी अंगो ं का विकास हो और जिसके द्वारा मनुष्य आध्यात्मिक, भौतिक तथा सामाजिक आदि सभी प्रकार के विभिन्न वातावरणों से समायोजन प्राप्त करना सीख जायें।

''रेमॉण्ट''–''शिक्षा उस विकास का नाम है जो शैशवावस्था से प्रौढ़ अवस्था तक होता ही रहता है।''

प्रत्येक छात्र का व्यक्तित्व उसकी सांस्कृतिक संचेतना एवं उसकी समायोजन क्षमता का स्तर भिन्न होता है, जिसके आधार पर शिक्षक उसका आकलन करते हैं।

छात्रों के सर्वांगीण विकास में शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान होता है, इसका एक पक्ष छात्रों के व्यक्तित्व का विकास करना है, जिसमें बुद्धि, रूचि, आत्मविश्वास, समायोजन क्षमता आदि आते हैं, दूसरा पक्ष समाज के भावी विकास में योगदान देता है, शिक्षा के द्वारा ही विचार आध्यात्मिक मूल्य सांस्कृतिक जागरूकता का विकास होता है।

प्रोफेसर ड्रीवर–''शिक्षा एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा बालक के ज्ञान, चरित्र तथा व्यवहार को एक विशेष साँचे में ढाला जाता है।''

पेस्टालॉजी–''शिक्षा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का स्वाभाविक, समरूप तथा प्रगतिशील विकास है।''

शिक्षा प्राप्त करने के लिए विद्यालय को एक एसी सामाजिक सस्ंथा के रूप में माना जाता है, जहाँ बालक अपनी योग्यताओं क्षमताओं, रूचियों और रूझानों के अनुसार अपना विकास करते हैं। विद्यालय को शिक्षा का केन्द्र माना जाता है।

विद्यालय का अर्थ

विद्यालय वे संस्थाएँ हैं जिन्हें सभ्य मनुष्य द्वारा इस उद्देश्य से स्थापित किया जाता है कि समाज में सुव्यवस्थित और योग्य सहायता के लिए बालकों की तैयारी में सहायता मिलें। वर्तमान में विद्यालय की छवि एक भवन के रूप से परिवर्तित होकर उभरी है जहाँ विद्यार्थी विविध क्षेत्रों के जाति, धर्म, सस्कृति एवं जीवन शैली का परिचय प्राप्त करते हुए उनकी रूचियों, योग्यताओं एवं कौशलों का विकास करता है। विद्यालय सांस्कृतिक संचेतना के संरक्षण एवं हस्तांतरण में सहायक है।

सरकारी विद्यालय

सरकारी–स्कूलों को सरकारी ऐजेंसियों द्वारा चलाया जाता है, या राज्य और संघीय स्तर पर सरकार द्वारा वित्त पोषित किया जाता है। सरकारी स्कूलों का पाठ्यक्रम राष्ट्रीय या राज्य स्तर पर तय किया जाता है, सभी सरकारी स्कूल समान पाठ्यक्रम का पालन करते हैं।

भारत में केन्द्रीय विद्यालय, नवोदय और आर्यों स्कूल जैसे कई सरकारी स्कूल मौजूद हैं। सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त विद्यालयों में मध्याह्न भोजन योजना चलायी जाती है।

निजी विद्यालय

निजी विद्यालय को सरकार द्वारा वित्त पोषित नहीं किया जाता है वे एक निजी निकाय द्वारा नियंत्रित होते हैं, निजी विद्यालयों के पाठ्यक्रम का निर्माण स्कूल बोर्ड द्वारा किया जाता है। निजी विद्यालय का पूरा संचालन निजी विद्यालयों में कर्मचारियों को वेतन संस्था द्वारा ही दिया जाता है। निजी विद्यालयों में शिक्षण के लिए नवीन तकनीकी संसधनों का अधिक प्रयोग किया जाता है।

सांस्कृतिक संचेतना

सांस्कृतिक संचेतना का अर्थ है विभिन्न संस्कृतियों के मूल्यों और विश्वासों को समझना, सांस्कृतिक संचेतना (जागरूकता) को अन्य समूहों और राज्यों के विभिन्न मूल्यों, रीति–रिवाजों द्वारा समझा और पहचाना जा सकता है। सांस्कृतिक संचेतना (जागरूकता) प्रत्येक व्यक्ति की भूमिकाओं और जिम्मेदारियों पर सकारात्मक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के लोगों के बारे में गलत धारणा से बचाने में मदद करता है। सांस्कृतिक संचेतना (जागरूकता) हमें विभिन्न संस्कृतियों का सम्मान करने की अनुमति देती है।

विद्यार्थियों में संस्कृति के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने के लिए विद्यालयों में सांस्कृतिक गतिविधियों आयोजित की जानी चाहिए। एक स्वस्थ समाज की स्थापना के लिए विद्यालय स्तर से ही विद्यार्थियों को सांस्कृतिक गतिविधियों को आयोजित करने से विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों का विकास होता है, जिससे विद्यार्थियों में सांस्कृतिक परम्पराओं के प्रति जिज्ञासा की भावना पैदा होती है और वे उनके महत्व को स्वीकार करते हैं।

व्यक्तित्व

व्यक्तित्व से अभिप्राय शारीरिक रचना, रंगरूप, वेशभूषा इत्यादि से लगाया जाता है, जो व्यक्ति बाह्य गुणों से जितना अधिक प्रभावित कर सकता हैं, वह उतना ही अधिक प्रभावशाली माना जाता है। व्यक्तित्व एक मनोवैज्ञानिक प्रणाली है, जिससे वातावरण में समायोजन किया जाता है, यह व्यक्ति के व्यवहारों, ढंगों, रूचियों तथा दृष्टिकोणों की क्षमताओं का विशिष्ट संगठन है। व्यक्तित्व मूल प्रवृत्तियों और अनुभवों के द्वारा अर्जित संस्कारों का योग है।

''मैटिन प्रिंस''–''व्यक्तित्व, व्यक्ति के समस्त जन्मजात सरं थानो ं आवेगों, प्रवृत्तियों, झुकावों एवं मूल प्रवृत्तियों और अनुभवों के द्वारा अर्जित संस्कारों एवं प्रवृत्तियों का योग है।''

व्यक्तित्व का वर्गीकरण–

बहिर्मुखी–बहिर्मुखी व्यक्ति सामाजिक होता है तथा सामाजिक कार्यों में विशेष ध्यान रखता है तथा एक दूसरे व्यक्तियों के साथ मधुर संबंध स्थापित करता है।

अन्तर्मुखी–अन्तर्मुखी व्यक्ति वह व्यक्ति है जिसको विशेषकर ध्यान स्वयं पर केन्द्रित होता है और यह अपने में ही प्राप्त रहता है, वह दूसरों से बोलना तथा मिलना कम पसन्द करता है।

उभयर्मुखी–वह व्यक्ति है जिसमें बहिर्मुखी और अन्तर्मुखी दोनों ही प्रकार की विशेषताएँ होती हैं।

समायोजन क्षमता–

समायोजन क्षमता वह है जिसके द्वारा व्यक्ति स्वयं और वातावरण के बीच अधिक समायोजन करता है। छात्रों के जीवन में अनेक प्रकार की अनुकूल एवं प्रतिकूल परिस्थितियों आती हैं, जिनका सामना करने के लिए छात्रों में समायोजन क्षमता का होना आवश्यक है।

छात्रों में विद्यालय में होने वाली विभिन्न गतिविधियों और कार्यकलापों में सक्रिय और उत्साहपूर्वक भाग लेने के लिए उनमें समायोजन क्षमता का होना आवश्यक है।

उपलब्धि अभिप्रेरणा

उपलधि अभिप्रेरणा छात्रों के विकास के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है, जिससे छात्रों के संवेगों, आकांक्षा एवं मूल प्रवृत्तियों का विकास होता है।

जॉनसन के अनुसार– प्रेरणा सामान्य क्रियाकलापों का प्रभाव है, जो व्यक्ति के व्यवहार को एक उचित मार्ग पर ले जाती है।

आवश्यकता एवं महत्व

आज के छात्र एवं छात्रायें ही देश के भावी कर्णधार हैं, और इनके विकास के लिए शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान है विद्यालय में शैक्षणिक गतिविधियों के साथ–साथ सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन भी विद्यार्थियों के विकास के लिए आवश्यक है। जिससे विद्यार्थियों में उनके व्यक्तित्व, सामाजिक उपयोगिता एवं समायोजन क्षमता की भावना विकसित होती है।

विद्यालय में सांस्कृतिक गतिविधियाँ आयोजित करने से विद्यार्थियों को अपने समाज और देश की संस्कृति से अवगत कराना है। विद्यालय में विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रमों को आयोजित करने से विद्यार्थी विविध प्रकार की सांस्कृतिक रीति–रिवाज, परम्पराओं, नैतिक मूल्यों को अच्छी तरह से समझ पाते हैं।

जिससे विद्यार्थियों को सांस्कृतिक गतिविधियों के माध्यम से विविध प्रकार की परम्परागत रूढ़ियों और अंधविश्वासों के प्रति जागरूक किया जा सकता है।

इस दिशा में विद्यार्थियों में सकारात्मक विकास के लिए शिक्षकों की भूमिका अहम होती है, शिक्षक वर्ग उन्हें उचित निर्देश प्रदान करके समायोजन क्षमता में सहायक सिद्ध होती हैं।

सामूहिक जागरूकता और कार्यवाही के माध्यम से विद्यार्थियों के सीखने और उपलब्धि को बढ़ाने के लिए संस्कृति का सकारात्मक उपयोग किया जा सकता है। माध्यामिक स्तर के छात्रों के लिए समायोजन क्षमता एक महत्वपूर्ण विशेषता है क्योंकि वे इस समायोजन क्षमता के माध्यम से समाज के विविध वातावरणीय परिस्थितियों के अनुकूल सांमजस्य स्थापित कर सकते हैं।

छात्रों के सम्पूर्ण विकास में समायोजन का बहुत अधिक महत्व है। एक समायोजित छात्र–छात्राएँ जीवन की हर चुनौतियों का सामना कर सकते हैं। अभिप्रेरणा विद्यार्थी को ध्यान केन्द्रित करने में सहायता करती है। अभिप्रेरणा को अधिगम का आवश्यक अंग

माना जाता है। अभिप्रेरणा छात्र की आंतरिक इच्छा शक्ति को प्रेरित करती है जिससे छात्र अपने उद्देश्य प्राप्ति हेतु हर संभव प्रयास करता है।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

स्टेनली (2014)– माध्यमिक स्तर की गणित विषय की उपलब्धि अभिप्रेरणा तथा समस्या योग्यता पर अध्ययन किया गया तथा यह निष्कर्ष निकाला गया कि विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा औसत से उच्च थी तथा इनकी समस्या समाधान योग्यता निम्न थी।

राथसर (2006)– इन्होंने हाईस्कूल के छात्रों के समायोजन का उनके सामाजिक, आर्थिक स्तर व विद्यालय के सामाजिक संरचना के संबंध में अध्ययन में पाया गया कि छात्रों व छात्राओं के समायोजन स्तर में अन्तर था।

समस्या कथन

प्रस्तुत शोध ''माध्यमिक स्तर के सरकारी व निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की सांस्कृतिक संचेतना एवं व्यक्तित्व के सन्दर्भ में उनकी समायोजन क्षमता तथा उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन'' से सम्बन्धित होगा जिस पर शोध कार्य किया जायेगा।

प्रस्तुत चरों की व्याख्या

सांस्कृतिक संचेतना– सांस्कृतिक संचेतना विभिन्न कारणों से छात्रों के लिए महत्वपूर्ण है, जिसके माध्यम से छात्र विभिन्न संस्कृतियों के लोगों के साथ सामंजस्य स्थापित कर पाते हैं, जिससे छात्र आपस में एक–दूसरे के विचारों को समझने और आपसी सम्बन्धों को मजबूत कर पाते हैं।

व्यक्तित्व– मनुष्य को केवल उसके रंग रूप, वेश भूषा, शरीर की बनावट आदि लक्षणों के आधार पर नहीं किया जा सकता, जिसमें उसकी भावनाएँ, मानसिकत, आत्मचिंतन आदि गुणों का होना भी आवश्यक है।

समायोजन क्षमता– समायोजन को संतुलन या अनुकूलन के नाम से भी जाना जाता है। विभिन्न परिस्थितियों के साथ संतुलन बनाए रखने का भाव होना चाहिए, जिससे छात्र अपने जीवन में आने वाले प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना कर सके।

उपलब्धि अभिप्रेरणा– उपलब्धि अभिप्रेरणा की प्रकृति व्यक्तिगत होती है। प्रत्येक विद्यार्थी की अभिप्रेरणा एक–दूसरे से भिन्न–भिन्न होती है। इसके द्वारा छात्रों के मनोबल को बढ़ावा मिलता है, जिससे छात्रों में सीखने की प्रवृत्ति जाग्रत होती है तथा छात्र अपनी अभिलाषा एवं श्रेष्ठता के स्तर को प्राप्त करने में सफल होते हैं।

शोध उद्देश्य

- माध्यमिक स्तर के गवर्नमेंट एवं प्राईवेट संस्था के बच्चों में सांस्कृतिक संचेतना का अध्ययन।
- माध्यमिक स्तर के गवर्नमेंट एवं प्राईवेट संस्था के बच्चों में समायोजन क्षमता का अध्ययन।
- माध्यमिक स्तर के गवर्नमेंट एवं प्राईवेट संस्था के छात्रो ं के व्यक्तित्व व सामंजस्यता के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन।
- माध्यमिक स्तर के गवर्नमेंट एवं प्राईवेट संस्था के छात्राओ ं के व्यक्तित्व व सामंजस्यता के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन।

शोध परिकल्पना

- माध्यमिक स्तर के गवर्नमेंट एवं प्राईवेट संस्था के छात्र एवं छात्राओं की सांस्कृतिक संचेतना के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा ।
- माध्यमिक स्तर के गवर्नमेंट एवं प्राईवेट संस्था के विद्यार्थियों की सामंजस्यता के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा ।
- गवर्नमेंट एवं प्राईवेट संस्था के व्यक्तित्व पर लिंग तथा क्षेत्र के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा ।
- माध्यमिक स्तर के शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों के संस्था का उनकी सामंजस्यता पर कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा ।
- माध्यमिक स्तर के गवर्नमेंट एवं प्राईवेट संस्था के छात्र एवं छात्राओ ं के व्यक्तित्व में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा ।

शोध की परिसीमाएँ

प्रस्तुत शोध में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया जाएगा, जिसमें गवर्नमेंट एवं प्राईवेट संस्था के छात्र एवं छात्राओं को लिया जायेगा। प्रस्तुत शोध में मेरठ क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के गवर्नमेंट एवं प्राईवेट संस्था के विद्यार्थियों को शामिल किया जायेगा।

शोध विधि

प्रस्तुत शोधकार्य हेतु सर्वे विधि का प्रयोग किया जायेगा।

जनसंख्या एवं न्यादर्श

प्रस्तुत शोध अध्ययन में मेरठ क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के गवर्नमेंट एवं प्राईवेट में अध्ययनरत् कुल 1000 विद्यार्थियों को यादृच्छिक न्यादर्श तकनीक द्वारा किया जाएगा। जिसमें 500 विद्यार्थी गवर्नमेंट संस्था से तथा 500 विद्यार्थी प्राइवेट संस्था से लिए जाऐंगे।

शोध उपकरण

- व्यक्तित्व मापनी— डॉ. महेश भार्गव
- समायोजन मापनी— आर.के. ओझा
- सांस्कृतिक नियतत्व माप— एन.एस. चौहान
- अकादमिक उपलब्धि अभिप्रेरणा मापनी— डॉ. टी.आर. शर्मा

शोध चर

- स्वतंत्र चर—सांस्कृतिक संचेतना व्यक्तित्व
- आश्रित चर—समायोजन क्षमता, उपलब्धि अभिप्रेरणा
- सहचर=(1) लिंग (छात्र, छात्रा) (2) स्तर—सरकारी व निजी

सांख्यिकीय विधि

प्रस्तुत शोध में अध्ययन के उद्देश्यों की प्रकृति के अनुरूप मध्ययान, मानक विचलन व टीस्कोर का प्रयोग किया जायेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- https ://www.getimpacity.com
- https ://hi-strephonsay.com
- https ://positivepschology.com
- www.wikipedia.com/adjustment
- www.allresearchjournal.com
- www.scotbuzz.org
- www.hindikeguru.com
- www.getimpactly.com
- Document: Janardan Rai Nagar Rajasthan Vidhyapeeth / D137309398
- https://www.scotbuzz.org/2021/09/upalabdhi-abhiprerana-kyahai.html
- https://www.hindikeguru.com/2021/07/motivation-in-hindi.html
- http://docplayer.me/118696258
- https://www.vaticannews.va/hi/pope/news/
- https://www.scotbuzz.org/2021/09/upalabdh